CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भक्ति आंदोलन और संत शंकरदेव का जीवन

प्रीतम लाम्बा
सहायक आचार्य (वीएसवाई)
इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर (राजस्थान)
Email- preetamlamba065@gmail.com, Email- 8619839003

First draft received: 05.11.2025, Reviewed: 88.11.2025
Final proof received: 09.11.2025, Accepted: 10.11.2025

सारांश

भक्ति आंदोलन मध्ययुगीन भारत में एक परिवर्तनकारी सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के रूप में उभरा। इसने आध्यात्मिकता के प्रति व्यक्तिगत और भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण की वकालत की, जिसमें व्यक्ति और परमात्मा के बीच सीधे संबंध पर जोर दिया गया। यह पेपर भक्ति आंदोलन के प्रमुख सिद्धांतों की जांच करता है, इसकी उत्पत्ति, विकास और सामाजिक पदानुक्रमों के क्षरण पर इसके गहरे प्रभाव का पता लगाता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे आंदोलन ने पारंपरिकजाति बाधाओं को पार किया, विभिन्न समुदायों के बीच समावेशिता और एकता को कैसे बढ़ावा दिया।

भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख संत शंकर देव इस अध्ययन के लिए केंद्र बिंदु प्रदान करते हैं। 15वीं शताब्दी में जन्मे, शंकरदेव ने अपना जीवन भक्ति पूजा को बढ़ावा देने, भजनों की रचना करने और प्रेम और करुणा की शिक्षाओं को फैलाने के लिए समर्पित कर दिया। यह पेपर शंकर देव के जीवनी संबंधी विवरणों की जांच करता है, उनके प्रारंभिक जीवन, आध्यात्मिक अनुभवों और भक्ति परंपरा की स्थापना पर प्रकाश डालता है। यह उनके साहित्यिक योगदान, विशेष रूप से उनकी महान रचना, "रामचरितमानस", जो हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण भक्ति पाठ है, का भी पता लगाता है।

अंत में, यह सेमिनार पेपर भक्ति आंदोलन और शंकर देव के जीवन की व्यापक समझ प्रदान करने का प्रयास करता है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ की जांच करके, यह धार्मिक विचारों पर भक्ति आंदोलन के स्थायी प्रभाव और मध्यकालीन भारत के आध्यात्मिक परिदृश्य को आकार देने में शंकर देव द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना चाहता है।

मुख्य शब्द: *भक्ति आंदोलन, आध्यात्मिकता, हिंदू धर्म आदि.*

प्रस्तावना

भक्ति आंदोलन और संत शंकर देव का जीवन भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरा में गहरा महत्व रखता है। भक्ति आंदोलन मध्ययुगीन काल के दौरान एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा, जिसने व्यक्तियों और परमात्मा के बीच गहरे संबंध को बढ़ावा दिया। आध्यात्मिक अनुभूति के साधन के रूप में भक्ति के विचार पर आधारित, यह आंदोलन जाति और पंथ से ऊपर उठकर, परमात्मा के साथ सीधे और व्यक्तिगत संबंध की वकालत करता है।

15वीं-16वीं शताब्दी के प्रतिष्ठित संत-विद्वान संत शंकर देव ने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में भक्ति आंदोलन के आदर्शों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। असम में जन्मे शंकर देव ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के साथ भक्ति का मिश्रण करते हुए अपना जीवन समाज के आध्यात्मिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उनका साहित्यिक योगदान, विशेष रूप से बोरगीत और अंकिया नाट, भक्ति और समावेशिता के सार के साथ गूंजते हुए, असमिया संस्कृति के मूलभूत तत्व बन गए।इस सेमिनार पेपर में, हम भक्ति आंदोलन और संत शंकर देव के जीवन के बीच के जटिल संबंध पर प्रकाश1 डालते हैं। भक्ति आंदोलन को जन्म देने

1 Barhoi, B. (2017). Eka sarana hari nama dharma: its role in social reformation and integration. *Bhakti Bhaibhav*, *86*, 349–354.

वाले ऐतिहासिक संदर्भ की खोज करते हुए, हम भारतीय उपमहाद्वीप में इस भक्ति लहर के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव को उजागर करते हैं। इसके साथ ही, शंकर देव के जीवन और शिक्षाओं का विस्तृत परीक्षण व अंतर्दृष्टि प्रदान करता है साथ ही यह भक्ति दर्शन विविध क्षेत्रीय संदर्भों में कैसे प्रकट हुआ इसकी व्याख्या करता है।

जैसे-जैसे हम इस अन्वेषण से आगे बढ़ते हैं, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और सामाजिक परिवर्तन का परस्पर संबंध स्पष्ट हो जाता है। भक्ति आंदोलन, प्रेम और परमात्मा के प्रति समर्पण पर जोर देने के साथ, भौगोलिक सीमाओं को पार कर गया, और भारतीय आध्यात्मिकता के ताने-बाने पर एक अमिट छाप छोड़ने का कार्य किया। इसी प्रकार शंकर देव का जीवन इसका उदाहरण है|

भारत में भक्ति आंदोलन के उद्भव

भारत में भक्ति आंदोलन मध्यकाल के दौरान 7वीं से 12वीं शताब्दी के आसपास उभरा। यह एक भक्ति आंदोलन था इसने जाति और धार्मिक सीमाओं से परे, ईश्वर के साथ व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध पर जोर दिया। विभिन्न संतों और दार्शनिकों से प्रभावित होकर इस आंदोलन ने विभिन्न क्षेत्रों में गति पकड़ी। दक्षिण भारत में अलवर और नयनार संत हुए, जिन्होंने तमिल में भक्ति भजनों की रचना की, जबकि उत्तर भारत में कबीर, रविदास और मीरा बाई जैसे संत थे, जिन्होंने निराकार, एकेश्वरवादी भगवान के प्रति भक्ति को बढ़ावा दिया।

भक्ति आंदोलन मुख्तय हिंदू धर्म की कर्मकांडीय और पदानुक्रमित प्रथाओं के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी और ब्राह्मणवादी रूढ़िवाद को चुनौती दी थी। इसने सिख धर्म के विकास को भी प्रभावित किया। इस आंदोलन ने भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को आकार देने, सामाजिक समानता को बढ़ावा देने और विविधता में एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भक्ति संतों की शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और उनका योगदान भारत में आध्यात्मिक साधकों को प्रेरित करता रहता है।

संत शंकरदेव की जीवनी

संत शंकरदेव, जिन्हें श्रीमंत शंकरदेव या महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय राज्य असम के 15वीं सदी के संत, विद्वान, कवि और सांस्कृतिक प्रतीक थे। उन्हें असमिया संस्कृति का जनक माना जाता है और वह असम के भक्ति आंदोलन में एक केंद्रीय धुरी हैं।

प्रारंभिक जीवन: शंकरदेव का जन्म 1449 में अटियाबारी गाँव में हुआ था, जो अब भारत के असम के शिवसागर जिले में स्थित है। उनके जन्मस्थान को बोर्डोवा के नाम से भी जाना जाता है। उनके पिता, कुसुम्वर भुइयां, एक प्रमुख जमींदार थे और उनकी माँ, सत्यसंध्या, एक पवित्र और धार्मिक महिला थीं।

आध्यात्मिक जागृति: शंकरदेव का बचपन से ही गहरा आध्यात्मिक रुझान था2। उन्हें उनके गुरु, संत वल्लभ द्वारा एकासरण धर्म (हिंदू धर्म का एक एकेश्वरवादी रूप) में दीक्षित किया गया था। उन्होंने जल्द ही सांसारिक जीवन त्याग दिया और खुद को भक्ति, ज्ञान और कला के जीवन के लिए समर्पित कर दिया।

साहित्यिक और कलात्मक योगदान: शंकरदेव ने असम के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कई भक्ति गीत, नाटक और कविताएँ लिखीं, जिनमें से कई आज भी असम में लोकप्रिय हैं। उनकी साहित्यिक कृतियों में "कीर्तन घोष" और "भागवत" शामिल हैं।

संकीर्तन आंदोलन: शंकरदेव को असम में संकीर्तन आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के लिए जाना जाता है। उन्होंने भक्ति के साधन के रूप में सामूहिक गायन और नृत्य की शुरुआत की, जो विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाया। इसने असमिया समाज को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक सुधार: वह एक समाज सुधारक भी थे और उन्होंने प्रचलित जाति व्यवस्था को खत्म करने और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए काम किया। उनकी शिक्षाओं में अनुष्ठानों और जाति भेदों के बजाय ईश्वर की भक्ति के महत्व पर जोर दिया गया।

सांस्कृतिक विरासत: संत शंकरदेव का प्रभाव विभिन्न कला रूपों तक फैला हुआ है, जिनमें बोरगीत (भक्ति गीत), अंकिया नट (एकांकी नाटक), और भाओना (धार्मिक नाटक) शामिल हैं। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के ये रूप अभी भी असमिया सांस्कृतिक पहचान के अभिन्न अंग हैं।

सत्र संस्थाओं की स्थापना: शंकरदेव ने असम के विभिन्न भागों में "सत्र" नामक मठवासी संस्थाओं की स्थापना की। इन सत्रों ने असम की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जीवन का अंत: संत शंकरदेव का निधन 1568 में शिवसागर के निकट सिहनाम गांव में हुआ। उनकी शिक्षाएँ और सांस्कृतिक विरासत आज भी असमिया लोगों की पहचान को आकार दे रही हैं।

असमिया संस्कृति, धर्म और समाज में संत शंकरदेव का योगदान अद्वितीय है, और उन्हें असम में एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया जाता है। उनका जीवन और कार्य क्षेत्र और उसके बाहर के लोगों की पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।3

शंकरदेव के समय में भारत की सामाजिक-राजनीतिक और धार्मिक स्थितियों का अन्वेषण-

असम में 15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान, अहोम राजवंश के शासन के तहत राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, विशेष रूप से असमिया इतिहास के एक प्रमुख व्यक्ति शंकर देव की अवधि के दौरान। इन शताब्दियों ने क्षेत्र के सामाजिक-राजनीतिक विकास में एक महत्वपूर्ण चरण को चिह्नित किया।

संत-विद्वान और सांस्कृतिक प्रतीक शंकर देव ने अपने समय के दौरान असम के राजनीतिक माहौल को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान म्यांमार के शान साम्राज्य से उत्पन्न अहोम राजवंश ने 13वीं शताब्दी की शुरुआत में असम में अपना शासन स्थापित किया था। 15वीं शताब्दी तक, अहोम लोगों ने खुद को शासक शक्ति के रूप में मजबूती से स्थापित कर लिया था।4

[2] Neog, M. (1982). *The Bhakti Ratnākara of Sankaradeva and History of the Concpt of Bhakti.* P.6

[3] Chutia, D.(1998*).Mahāpuruṣa Śrimanta Śaṅkardeva Vākyamṛt.* P.546

1) 4 Sarvagunakar SHRIMANT SHANKARDEV : Dr. Rishikesh Rai , 2023 page.12-20

शंकर देव के काल की राजनीतिक स्थिति में अहोम राजनीतिक प्रशासन और संत के सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव का मिश्रण था। शंकर देव ने अपने शिष्य माधव देव के साथ मिलकर भक्ति और सांस्कृतिक एकीकरण पर जोर देते हुए असम में भक्ति आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया।इस युग के दौरान राजनीतिक स्थिति की प्रमुख विशेषताओं में से एक अहोम प्रशासन द्वारा लाई गई स्थिरता थी। अहोम शासकों ने एक परिष्कृत शासन प्रणाली लागू की, जिसमें विभिन्न प्रशासनिक इकाइयाँ शामिल थीं जिन्हें "मोरुंग" कहा जाता था। राजा, मंत्रियों और अधिकारियों की सहायता से, कुशल प्रशासन सुनिश्चित करते हुए, इन इकाइयों पर नियंत्रण बनाए रखता था।

अहोम राज्य की विशेषता भू-राजस्व की एक अनूठी प्रणाली थी जिसे "भुयान" कहा जाता था, जहां सैन्य सेवा के बदले में भूमि सैन्य कमांडरों को सौंपी जाती थी। इस प्रणाली ने न केवल सैन्य संरचना को मजबूत किया बल्कि राज्य की आर्थिक स्थिरता में भी योगदान दिया।

शंकर देव के काल में सांस्कृतिक और धार्मिक माहौल ने राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नव-वैष्णववाद आंदोलन को बढ़ावा देने के शंकर देव के प्रयासों ने लोगों की एकता में योगदान दिया। भक्ति आंदोलन ने, भगवान कृष्ण के प्रति समर्पण पर जोर देते हुए, जाति बाधाओं को पार किया और सांस्कृतिक एकता की भावना को बढ़ावा दिया।नव-वैष्णव आंदोलन का भी शासकों पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे उनकी नीतियां प्रभावित हुईं। अहोम राजा, अपने राजनीतिक प्रभुत्व को बनाए रखते हुए, नामघरों (प्रार्थना कक्ष) के निर्माण और सांस्कृतिक गतिविधियों का समर्थन करते हुए, भक्ति आंदोलन के संरक्षक बन गए।

हालाँकि, राजनीतिक परिदृश्य में चुनौतियाँ मौजूद थीं। 16वीं शताब्दी के दौरान मुगलों के बाहरी खतरों ने अहोम शासन के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश की। असम पर कब्ज़ा करने के मुग़लों के प्रयासों को भयंकर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, विशेषकर अहोम राजा सुकलेंगमुंग के शासनकाल के दौरान।

1671 में अहोम जनरल लाचित बोरफुकन के नेतृत्व में सरायघाट की लड़ाई असम के इतिहास की एक उल्लेखनीय घटना है। अहोमों ने मुगल सेना को सफलतापूर्वक खदेड़ दिया, जिससे क्षेत्र की स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई। इस जीत ने अहोम शासन को मजबूत किया और उनकी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया।निष्कर्षतः, शंकर देव के काल में 15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान असम में राजनीतिक स्थिति एक स्थिर अहोम प्रशासन, सांस्कृतिक और धार्मिक एकीकरण और बाहरी खतरों के खिलाफ लचीलेपन द्वारा चिह्नित थी। राजनीतिक ताकत और सांस्कृतिक एकता के संश्लेषण ने असम में बाद के सामाजिक-राजनीतिक विकास की नींव रखी।

साहित्य समीक्षा

सर्वगुणकर श्रीमंत शंकरदेव द्वारा डॉ. ऋषिकेश राय, 2023: डॉ. ऋषिकेश राय की 2023 की कृति, "सर्वगुणकर श्रीमंत शंकरदेव", श्रीमंत शंकरदेव के आसपास के विद्वतापूर्ण प्रवचन में योगदान देती है। राय की खोज संभवतः श्रीमंत शंकरदेव के बहुमुखी गुणों की गहन जांच प्रस्तुत करती है, जो उनके जीवन और योगदान के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है।

प्रांजल कुमार नाथ, भारतीय संस्कृति में श्रीमंत शंकर देव का भक्ति आंदोलन: प्रांजल कुमार नाथ का यह विद्वतापूर्ण कार्य श्रीमंत शंकर देव के भक्ति आंदोलन पर प्रकाश डालता है, जो भारतीय संस्कृति पर इसके प्रभाव के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

असम में शंकरदेव और भक्ति आंदोलन पर साहित्य समृद्ध और विविध है, जो कई दशकों तक फैला हुआ है। बरुआ की (1960) "शंकरदेव: असम के वैष्णव संत" शंकरदेव के जीवन और वैष्णव आंदोलन में योगदान का एक मूलभूत अन्वेषण प्रदान करती है।5 समय के साथ आगे बढ़ते हुए, बरुआ (1999) ने "सिंतार आभास" में भक्ति आंदोलन के बौद्धिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए, शंकरदेव के दर्शन के सूक्ष्म पहलुओं पर प्रकाश डाला।

बर्मन की (1986) कृति, "श्रीमंत शंकरदेव: कृति अरु कृतित्त्व", शंकरदेव के कार्यों और व्यक्तित्व दोनों की जांच करके एक समग्र परिप्रेक्ष्य प्रदान करके गहराई जोड़ती है। अंत में, बेजबरुआ का (2012) "श्री श्री शंकरदेव अरु श्री श्री माधवदेव" भक्ति आंदोलन के प्रमुख व्यक्तित्व शंकरदेव और माधवदेव के बीच गतिशील संबंधों की खोज करके प्रवचन में योगदान देता है। साथ में, ये कार्य शंकरदेव और असम में भक्ति आंदोलन की व्यापक समझ प्रदान करते हैं, जो उन्हें सेमिनार पेपर "शंकर देव या भक्ति आंदोलन" के लिए मूल्यवान स्रोत बनाते हैं।

शंकरदेव की दार्शनिक एवं धार्मिक शिक्षाओं की व्याख्या

शंकरदेव 16वीं सदी के भारतीय संत, कवि और दार्शनिक थे जिन्हें भक्ति आंदोलन में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। उनकी शिक्षाएँ भगवान कृष्ण के प्रति भक्ति पर जोर देती थीं और निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित थीं:

भक्ति योग : शंकरदेव ने आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करने के लिए भक्ति के मार्ग की वकालत की। उन्होंने मोक्ष प्राप्त करने के साधन के रूप में भगवान कृष्ण के साथ प्रेमपूर्ण, व्यक्तिगत संबंध के महत्व पर जोर दिया।

एकेश्वरवाद : उन्होंने एकल, निराकार और सर्वव्यापी ईश्वर की अवधारणा को बढ़ावा दिया, जिसे अक्सर "एक शरण हरि" कहा जाता है। इस एकेश्वरवादी विश्वास ने उनके दर्शन को आधार बनाया।

संकीर्तन : शंकरदेव ने भक्ति बढ़ाने और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के एक तरीके के रूप में संकीर्तन, सामूहिक गायन और भगवान के नाम का जप करने की प्रथा को लोकप्रिय बनाया।6

वैराग्य और त्याग : उन्होंने भौतिक संपत्तियों से वैराग्य और परमात्मा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक सरल जीवन शैली को प्रोत्साहित किया। आध्यात्मिक प्रगति के लिए सांसारिक इच्छाओं का त्याग आवश्यक माना गया।7

सामुदायिक भवन : शंकरदेव ने एकासरण धर्म के मठवासी आदेश की स्थापना की, जिसमें सामुदायिक जीवन, नैतिक मूल्यों और समाज की सेवा पर जोर दिया गया। उनका लक्ष्य एक सामंजस्यपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से केंद्रित समाज बनाना था।

साहित्यिक योगदान : उन्होंने अपनी आध्यात्मिक शिक्षाओं को सरल और सुलभ तरीके से व्यक्त करने के लिए कई भक्ति गीतों

---

[5] Neog, M. (1982). *The bhakti ratnakar of Sankaradeva and history of the concpt of bhakti*. Punjub University.
[6] Goswami, K. (2007). *Mahapurusha Sankaradeva.*P.4
[7] Neog, M. (2018). *Sankaradeva and His Times Early History of Vaishnava Faith and Movement in Assam.* P.110

और काव्य रचनाओं की रचना की, जैसे कि बोरगेट्स और अंकिया नट नाटक।

शंकरदेव की शिक्षाएँ असम के धार्मिक और सांस्कृतिक ताने-बाने और भारत में व्यापक भक्ति आंदोलन को प्रभावित करना जारी रखती हैं, जो भक्ति, सादगी और परमात्मा के साथ व्यक्तिगत संबंध पर जोर देती हैं।

असम और उसके बाहर भक्ति के प्रचार में शंकर देव की भूमिका

शंकरदेव, जिन्हें श्रीमंत शंकरदेव के नाम से भी जाना जाता है, ने 15वीं-16वीं शताब्दी में असम और उसके बाहर भक्ति संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां उनके योगदान के कुछ प्रमुख पहलू हैं:

नव-वैष्णववाद: शंकरदेव ने असम में नव-वैष्णव आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने भगवान कृष्ण की शिक्षाओं का प्रचार किया और अनुष्ठानों और जाति भेदों के बजाय मोक्ष के मार्ग के रूप में भगवान की भक्ति पर जोर दिया। इस भक्ति आंदोलन का असम के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।[8]

साहित्यिक योगदान: शंकरदेव ने गीत, नाटक (अंकिया नाट) और कविता सहित भक्ति साहित्य की एक विशाल श्रृंखला की रचना की। उनकी रचनाएँ असमिया भाषा में थीं, जिससे वे आम लोगों के लिए सुलभ हो गईं। उनकी रचनाएँ आज भी असम में गाई और प्रस्तुत की जाती हैं।

सत्रास: शंकरदेव ने "सत्रस" नामक मठवासी संस्थानों की स्थापना की, जहां उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा, संगीत, नृत्य और कला प्रदान की। ये सत्र भक्ति के प्रचार के केंद्र बन गए और असमिया संस्कृति के संरक्षण के केंद्र के रूप में कार्य किया।

सांस्कृतिक पुनरुद्धार: शंकरदेव का प्रभाव धर्म से परे फैला। उन्होंने बोरगीत (भक्ति गीत), सत्रिया नृत्य और पारंपरिक शिल्प सहित विभिन्न शास्त्रीय असमिया कला रूपों को पुनर्जीवित किया। ये कला रूप असमिया संस्कृति के अभिन्न घटकों के रूप में विकसित हो रहे हैं।

सामाजिक सुधार: उन्होंने सामाजिक[9] समानता और जाति-आधारित भेदभाव के उन्मूलन की भी वकालत की। उनकी शिक्षाओं ने ईश्वर की दृष्टि में सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करने के महत्व पर जोर दिया।

असम से परे प्रभाव: शंकरदेव के भक्ति आंदोलन ने असम की सीमाओं को पार किया और बंगाल और ओडिशा जैसे पड़ोसी क्षेत्रों को प्रभावित किया। सत्रिया नृत्य सहित भक्ति और सांस्कृतिक तत्वों के उनके दर्शन का इन क्षेत्रों पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

असम और उसके बाहर भक्ति को बढ़ावा देने में शंकरदेव के योगदान ने न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव डाला, बल्कि सामाजिक सुधारों और असमिया विरासत के संरक्षण में भी योगदान दिया। उनकी विरासत आज भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को आकार दे रही है।

शंकरदेव के नाटकों, कविता और गद्य सहित उनके साहित्यिक योगदान का विश्लेषण

16वीं सदी के असमिया बहुश्रुत श्रीमंत शंकरदेव ने असमिया संस्कृति में गहरा साहित्यिक योगदान दिया। वह अपने नाटकों, कविता और गद्य के लिए प्रसिद्ध हैं, इन सभी ने असमिया साहित्य को समृद्ध किया है।

नाटक : शंकरदेव के नाटक, जिन्हें "अंकिया नाट्स" के नाम से जाना जाता है, ने असमिया थिएटर परंपरा की शुरुआत की। ये एकांकी नाटक भक्ति, संगीत और नृत्य का मिश्रण थे, जिनमें अक्सर रामायण और महाभारत के प्रसंगों को दर्शाया जाता था।[10]

कविता : उनकी भक्ति कविता, जिसमें "बोर्गेट" और "गुणमाला" शामिल हैं, ने गहरे आध्यात्मिक विषयों को व्यक्त किया। इन श्लोकों ने भगवान कृष्ण की महिमा का बखान किया और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

गद्य : शंकरदेव की गद्य रचनाओं में "कीर्तन घोष" और "भक्ति रत्नावली" जैसे धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ शामिल हैं। इन लेखों ने नव-वैष्णववाद का सार बताया।

सांस्कृतिक प्रभाव : उनके साहित्यिक योगदान का असमिया संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा, भक्ति आंदोलन को बढ़ावा दिया और सांस्कृतिक एकता स्थापित की।

विरासत : शंकरदेव की साहित्यिक विरासत कायम है, क्योंकि उनके कार्यों का प्रदर्शन, पाठ और अध्ययन जारी है, जिससे असम की समृद्ध साहित्यिक और आध्यात्मिक विरासत संरक्षित है।

उनकी साहित्यिक रचनाओं के महत्व

कलात्मक नवाचार : उनके साहित्यिक कार्यों ने कलात्मक अभिव्यक्ति की सीमाओं को आगे बढ़ाया, नई शैलियों और तकनीकों को पेश किया जिसने लेखकों की पीढ़ियों को प्रभावित किया।

सामाजिक टिप्पणी : उनका लेखन अक्सर सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालता है, गंभीर चिंताओं पर प्रकाश डालता है और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

सांस्कृतिक प्रभाव : उनके कार्य सांस्कृतिक कसौटी बन गए, लोकप्रिय संस्कृति को आकार दिया और विभिन्न कला रूपों में प्रेरणादायक अनुकूलन किया।

मानव अंतर्दृष्टि : अपने पात्रों और आख्यानों के माध्यम से, उन्होंने मानवीय स्थिति में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की, प्रेम, संघर्ष और अर्थ की खोज जैसे विषयों की खोज की।

ऐतिहासिक प्रासंगिकता : उनका लेखन एक ऐतिहासिक लेंस के रूप में काम कर सकता है, जो अतीत पर मूल्यवान दृष्टिकोण के साथ, उस समय और स्थान की झलक पेश करता है जहां वह रहते थे।

बौद्धिक विरासत : उनके विचार और दर्शन, उनके ग्रंथों में अंतर्निहित, सभी विषयों में बौद्धिक प्रवचन और बहस को प्रोत्साहित करते रहते हैं।

[8] Chatterji, S. K. (1970). *The place of Assam in the history and civilisation of India*. Department of Publication University of Gauhati.

[9] Goswami, K. D. (n.d.). *Life and teachings of mahapurusa Sankaradeva*. Forum For Sankaradeva Studies.

[10] Jaiswal, S. (1967). *The origine and development of vaishnavism*. Munshiram Manoharlal Publishers Pvt Ltd.

वैश्विक प्रभाव : उनकी साहित्यिक रचनाएँ सीमाओं को पार कर गईं, विविध पृष्ठभूमि के लोगों के साथ जुड़कर वैश्विक साहित्यिक विरासत में योगदान दिया।

शैक्षिक मूल्य : उनके कार्य शैक्षिक पाठ्यक्रम में आवश्यक हैं, छात्रों में साहित्यिक प्रशंसा और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ावा देते हैं।

भावनात्मक अनुनाद : उनका लेखन विभिन्न प्रकार की भावनाओं को उद्घाटित करता है, सहानुभूति को बढ़ावा देता है और मानवीय अनुभव से गहरा संबंध बनाता है।

कालातीत प्रासंगिकता : उनके कार्यों में खोजे गए विषय प्रासंगिक और प्रासंगिक बने हुए हैं, जिससे उनकी स्थायी अपील और प्रभाव सुनिश्चित होता है।

शंकरदेव ने असम के सांस्कृतिक और कलात्मक परिदृश्य को कैसे प्रभावित किया।

15वीं-16वीं सदी के संत-विद्वान, कवि, नाटककार और समाज सुधारक श्रीमंत शंकरदेव का असम के सांस्कृतिक और कलात्मक परिदृश्य पर गहरा प्रभाव था। उनके योगदान को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

साहित्य और कविता: शंकरदेव ने कई भक्ति गीतों की रचना की, जिन्हें बोरगेट्स के नाम से जाना जाता है, और अंकिया नट नामक कई नाटक लिखे, जिन्होंने असमिया साहित्य और नाटक की नींव रखी। उनकी साहित्यिक रचनाएँ पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती हैं और 11असमिया संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।

नृत्य और नाटक: शंकरदेव की नृत्य-नाटिका की नवीन शैली, जिसे सांकरी संस्कृति के रूप में जाना जाता है, में धार्मिक और नैतिक संदेश देने के लिए नृत्य, संगीत और नाटक के तत्व शामिल थे। कृष्ण और राधा जैसे पात्रों वाली यह कला शैली अभी भी असम में प्रदर्शित की जाती है और इसने असमिया प्रदर्शन कलाओं पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है।

धार्मिक सुधार: उन्होंने असम के धार्मिक परिदृश्य को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने नव-वैष्णववाद आंदोलन का प्रचार किया, जिसमें भगवान कृष्ण के प्रति समर्पण और जाति या सामाजिक स्थिति के बावजूद सभी व्यक्तियों के बीच समानता पर जोर दिया गया। इसका असम की धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

सांस्कृतिक एकता: शंकरदेव ने सांस्कृतिक और धार्मिक सद्भाव की वकालत करके असम में विविध समुदायों के बीच एकता और एकीकरण को बढ़ावा दिया। उनकी शिक्षाओं ने क्षेत्र में विभिन्न जातीय और भाषाई समूहों के बीच अंतर को पाटने में मदद की।

कला और शिल्प: उन्होंने असमिया कला और 12शिल्प के विकास में योगदान दिया, विशेष रूप से सत्रों (मठवासी संस्थानों) के निर्माण में। सत्र कलात्मक गतिविधियों के केंद्र बन गए, जिनमें उत्कृष्ट मुखौटों, मूर्तियों और पारंपरिक असमिया शिल्प का निर्माण शामिल था।

भाषा और लिपि: शंकरदेव के कार्यों ने असमिया भाषा और लिपि को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने असमिया को धार्मिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में पेश किया, जिससे असमिया लोगों की पहचान और मजबूत हुई।

संक्षेप में, श्रीमंत शंकरदेव के बहुमुखी योगदान ने असम की सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत पर एक अमिट छाप छोड़ी। उनके प्रभाव को पूरे राज्य में मनाया और याद किया जाता है, जो क्षेत्र के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ताने-बाने पर उनके स्थायी प्रभाव को दर्शाता है।

शंकरदेव की शिक्षाओं और सांस्कृतिक योगदान के स्थायी प्रभाव की व्याख्या

शंकरदेव, जिन्हें श्रीमंत शंकरदेव के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय राज्य असम में 15वीं सदी के संत, विद्वान, कवि और सांस्कृतिक प्रतीक थे। उनकी शिक्षाओं और सांस्कृतिक योगदान का इस क्षेत्र पर स्थायी प्रभाव पड़ा है:

धार्मिक सुधार : शंकरदेव ने भगवान कृष्ण की भक्ति की वकालत करते हुए असम में भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नव-वैष्णववाद दर्शन ने धार्मिक अभ्यास में भक्ति, प्रेम और सादगी पर जोर दिया, जो असमिया लोगों के धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन को प्रभावित करता है।

साहित्यिक विरासत : शंकरदेव एक विपुल लेखक थे, जिन्होंने विभिन्न भक्ति गीत, नाटक और कविता की रचना की। उनकी साहित्यिक रचनाएँ, जैसे बोरगेट्स और अंकिया नट (एकांकी नाटक), अभी भी असमिया सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए प्रदर्शित और मनाई जाती हैं।

सत्रिया नृत्य : उन्हें असम के शास्त्रीय नृत्य सत्रिया नृत्य के विकास का श्रेय दिया जाता है। अपने अनूठे संगीत और गतिविधियों के साथ यह नृत्य शैली असमिया संस्कृति का एक अभिन्न अंग बनी हुई है।

सामाजिक और सांस्कृतिक एकता : विभिन्न जातियों और समुदायों के लोगों के बीच एकता और समानता की भावना को बढ़ावा देने के शंकरदेव के प्रयासों ने असम में सामाजिक एकता में योगदान दिया। उनकी शिक्षाएँ सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देती रहती हैं।

भाषा और कला : असमिया भाषा और कला में उनके योगदान ने एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने असमिया लिपि का मानकीकरण किया और अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से भाषा को समृद्ध किया।

धार्मिक संस्थाएँ : शंकरदेव ने अपनी शिक्षाओं और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई मठों (सत्रों) की स्थापना की। ये संस्थान अभी भी मौजूद हैं, संस्कृति, शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा के केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं।

त्यौहार और उत्सव : बिहू और शंकर जयंती जैसे विभिन्न त्यौहार और कार्यक्रम, असम में उनकी विरासत को जीवित रखते हुए, उनके जीवन और योगदान का जश्न मनाते हैं।

संक्षेप में, शंकरदेव की शिक्षाओं और सांस्कृतिक योगदान ने असमिया संस्कृति के आध्यात्मिक, कलात्मक और सामाजिक पहलुओं को गहराई से प्रभावित किया है, एक स्थायी विरासत छोड़ी है जिसे क्षेत्र में संजोया और अभ्यास किया जाता है।13

शंकरदेव के विचारों और दृष्टिकोण की अन्य प्रमुख विचारों से तुलना

11 Lekharu, U. C. (2006). *Katha-Gurucharit.* Duttabaruah Publishing Company Private Limited.
12 Mahanta, P. J. (2007). *The Sankaradeva movement: its culturl horizons*. Purbanchal Prakash.

शंकरदेव: उन्हें उनके साहित्यिक योगदान के लिए जाना जाता है, जिसमें अंकिया नाट (एकांकी नाटक) और बोरगेट्स (भक्ति गीत) का निर्माण भी शामिल है।

अन्य भक्ति संत: तुलसीदास (रामचरितमानस के लेखक) और सूरदास (अपने भक्ति गीतों के लिए जाने जाते हैं) जैसे संतों ने अपनी-अपनी भाषाओं में महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान दिया।

क्षेत्रीय प्रभाव:

शंकरदेव: उनका प्रभाव मुख्य रूप से असम और भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में था।

अन्य भक्ति संत: तुकाराम (महाराष्ट्र), चैतन्य महाप्रभु (बंगाल) और नामदेव (महाराष्ट्र) जैसे संतों पर अधिक स्थानीय प्रभाव था।

पूजा पद्धतियाँ:

शंकरदेव: उन्होंने अपनी भक्ति प्रथाओं में नृत्य, नाटक और संगीत के उपयोग पर जोर दिया।

अन्य भक्ति संत: पूजा पद्धतियाँ विविध थीं; उदाहरण के लिए, रामानुज ने दार्शनिक चर्चाओं पर जोर दिया, जबकि मीरा बाई की भक्ति अत्यंत व्यक्तिगत थी और कविता के माध्यम से व्यक्त की गई थी।

दार्शनिक मान्यताएँ:

शंकरदेव: उन्होंने मोक्ष प्राप्त करने के साधन के रूप में देवता के प्रति समर्पण (शरणगति) के महत्व पर जोर दिया।

अन्य भक्ति संत: विभिन्न संतों के पास विभिन्न दार्शनिक आधार थे, जैसे कबीर की एकेश्वरवादी मान्यताएँ और रामानुज का योग्य गैर-द्वैतवाद (विशिष्टाद्वैत) का दर्शन।

संक्षेप में, जबकि शंकरदेव ने भक्ति और समावेशिता के मूल भक्ति सिद्धांतों को अन्य संतों के साथ साझा किया, उनके अद्वितीय क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भ, साथ ही कला और साहित्य पर उनके जोर ने उन्हें भक्ति आंदोलन में अपने समकालीनों से अलग कर दिया।

शंकरदेव के विचारों और दृष्टिकोण की अन्य प्रमुख विचारों से तुलना करें और समानताओं और अंतरों पर प्रकाश

16वीं सदी के भारतीय संत, कवि और असम के समाज सुधारक शंकरदेव के पास एक अद्वितीय दृष्टिकोण और विचार थे जिनकी तुलना रामानुज, चैतन्य महाप्रभु और गुरु नानक जैसी अन्य प्रमुख हस्तियों से की जा सकती है।14

समानताएँ:

भक्ति आंदोलन: शंकरदेव, रामानुज, चैतन्य महाप्रभु और गुरु नानक सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में भक्ति आंदोलन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आध्यात्मिक मुक्ति के साधन के रूप में व्यक्तिगत ईश्वर के प्रति समर्पण पर जोर दिया।

धार्मिक सुधार: इन नेताओं ने अपने समय की स्थापित धार्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों के कुछ पहलुओं को चुनौती दी। उन्होंने आध्यात्मिकता को सरल बनाने और आम लोगों के लिए अधिक सुलभ बनाने का प्रयास किया।

सांस्कृतिक प्रभाव: उन्होंने अपने क्षेत्रों की संस्कृति और कलाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए, शंकरदेव ने असम में बोरगेट्स (भक्ति गीत) और सत्रिया नृत्य शैली की शुरुआत की।

अंतर:

धार्मिक मान्यताएँ: शंकरदेव का धर्मशास्त्र भगवान कृष्ण और विष्णु की पूजा में निहित था। रामानुज ने भगवान विष्णु की भक्ति पर जोर दिया, जबकि चैतन्य महाप्रभु का ध्यान भगवान कृष्ण की पूजा पर था। गुरु नानक ने सिख धर्म की स्थापना की, जिसमें एकेश्वरवादी मान्यताएं और एक विशिष्ट धार्मिक ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब है।

क्षेत्रीय फोकस: शंकरदेव ने मुख्य रूप से असम में काम किया, जबकि रामानुज और चैतन्य महाप्रभु क्रमशः दक्षिण भारत और बंगाल में अधिक सक्रिय थे। गुरु नानक की शिक्षाएँ पंजाब क्षेत्र में उभरीं।

सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ: जिस सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में ये आंकड़े काम करते थे, वह भिन्न-भिन्न था। शंकरदेव के प्रयास असमिया लोगों के सामने आने वाली सामाजिक और धार्मिक चुनौतियों के जवाब में थे। रामानुज ने दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन, बंगाल में चैतन्य महाप्रभु और गुरु नानक ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच तनाव वाले समाज में काम किया।

जबकि इन प्रमुख हस्तियों ने भक्ति और सुधार के प्रति प्रतिबद्धता साझा की, उनके अद्वितीय धार्मिक दृष्टिकोण और क्षेत्रीय प्रभावों के कारण उनके दृष्टिकोण और विशिष्ट शिक्षाओं में विविधताएं आईं।

शंकरदेव और भक्ति आंदोलन के महत्व

16वीं सदी के भारतीय संत, कवि और समाज सुधारक शंकरदेव ने भक्ति आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक स्थायी विरासत छोड़ी जो आज भी भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करती है।

उनकी गहन भक्ति और साहित्यिक योगदान, जिसमें भक्ति गीत और बोर्गेट और अंकिया नट जैसी काव्य रचनाएँ शामिल हैं, भक्ति आंदोलन के सार का उदाहरण देते हैं। शंकरदेव की शिक्षाओं ने पारंपरिक अनुष्ठानों और जाति सीमाओं से परे, व्यक्ति और परमात्मा के बीच सीधे, व्यक्तिगत संबंध पर जोर दिया।

उनके समावेशी दृष्टिकोण ने सामाजिक सद्भाव और एकता को बढ़ावा दिया। सार्वभौमिक प्रेम और करुणा पर शंकरदेव का जोर पीढ़ियों को प्रेरित करता है, धार्मिक सहिष्णुता और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, असमिया भाषा और संस्कृति में उनके योगदान ने असमिया विरासत को संरक्षित और समृद्ध करते हुए एक अमिट छाप छोड़ी है।

शंकरदेव द्वारा समर्थित भक्ति आंदोलन, आध्यात्मिकता का एक प्रतीक बना हुआ है, जो लौकिक सीमाओं को पार करता है और विविध समुदायों के बीच आध्यात्मिक एकता की भावना को बढ़ावा देता है। विभाजनों से भरी दुनिया में, शंकरदेव और भक्ति आंदोलन का स्थायी महत्व प्रेम, भक्ति और एकता के कालातीत मूल्यों के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

निष्कर्ष

श्रीमंत शंकर देव के भक्ति आंदोलन का उद्देश्य समाज के सभी लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करना, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर, असतत से सत्य की ओर और भ्रम से मोक्ष की ओर ले जाना था। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया

और समाज को नई राह दिखाई। उस समय उन्होंने लोगों को आडंबर, बाह्य पूजा पद्धति के स्थान पर केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा करने की पद्धति अपनाने की सलाह दी और भक्ति के कठिन मार्ग को बहुत आसान और सुलभ बनाने का प्रयास किया।श्रीमंत शंकर देव अपने भक्ति आंदोलन के बल पर समाज की समस्त अनुशासनहीन एवं विकृतियों का सुधार कर भारतीय संस्कृति में असम के गौरव एवं गौरव को स्थापित करने में सफल रहे। अपने धर्म "एक शरण नाम धर्म" का प्रचार और प्रसार करते समय उन्हें कई चुनौतियो और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। जिस तरह से वह अपने नव-वैष्णव आंदोलन के साथ भारत और असम को एक साथ लेकर चलते हैं, वह सच्चे अर्थों में बहुत प्रशंसा का विषय है।

Bibliography

1) Pranjal Kumar Nath, SHREEMANT SHANKAR DEV'S BHAKTI MOVEMENT IN INDIAN CULTURE-Palarch's Journal Of Archaeology Of Egypt/Egyptology 18(4), ISSN 1567-214x

BHARATIYA BHAKTI ANDOLAN AUR SHRIMANT SHANKARDEV : Suryakant Tripathi , 2021

Sarvagunakar SHRIMANT SHANKARDEV : Dr. Rishikesh Rai , 2023

4) Aggarwala, V. B. (2002). Handbook of journalism and mass communication. Concept Publishing Company.

5) Barhoi, B. (2017). Eka sarana hari nama dharma: its role in social reformation and integration. Bhakti Bhaibhav, 86, 349–354.

6) Barman, S. (1986). Srimanta Sankaradev: kriti aru krititтva. Jagaran Sahitya Prakash.

7) Barman, S. (1999). An unsung colossus: an introduction to the life and works of Sankaradeva. Forum for Sankaradeva Studies.

8) Barpujari, H. K. (1994). The comprehensive history of Assam: Vol. III. Publication Board Assam.

9) Barua, B. (2011). A cultural history of Assam (early period). Bina Library.

10) Baruah, A. (2015). Studies on the bhaktiratnakara of Sri Sankaradeva [Doctoral thesis]. *http://hdl.handle.net/10603/99567*.

11) Baruah, B. (1960). Sankaradeva: vaishnava saint of Assam. Bina Library.

Baruah, P. K. (1999). Cintar abhas. Banalata.

12) Bezbarua, L. (2012). Sri Sri Sankardev aru Sri Sri Madhavdeva. Banalata.